कक्षा — आठवीं

पाठ 10 — कामचोर

कहानी से —

उ०1 = कहानी में मोटे-मोटे किस काम के हैं, बच्चों के बारे में कहा गया है क्योंकि वे घर के कामकाज में जरा सी भी मदद नहीं करते थे तथा दिन भर उधम मचाते रहते थे। इस तरह से ये कामचोर हो गए थे।

उ०2 = बच्चों के उधम मचाने से घर अस्त-व्यस्त हो गया। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढ़क गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में धूल, मिट्टी और कीचड़ का ढेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गईं। मुर्गे-मुर्गियों के कारण सारे कपड़े गंदे हो गए। इस वजह से पारिवारिक शांति भी भंग हो गई। अम्मा ने तो घर छोड़ने का भी फैसला ले लिया।

उ०3 = अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर के हालात को देखकर ऐसा कहा था। जब पिताजी ने बच्चों को घर के कामकाजों में हाथ बँटाने को कहा, तब उन्होंने इसके विपरीत सारे घर को तहस-नहस कर दिया। जिससे अम्माजी परेशान हो गई थीं। इसका परिणाम यह हुआ कि पिता जी ने बच्चों को घर की किसी भी चीज को हाथ लगाने से मना कर दिया। अगर किसी भी बच्चे ने घर के काम काजको हाथ लगाया तो रात का खाना नहीं दिया जाएगा।

उ०4 = यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है कि बच्चों को घर के कामों से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए। उन्हें उनके स्वभाव के अनुसार उम्र और रुचि को ध्यान में रखते हुए काम कराना चाहिए। जिससे बचपन से ही उनमें काम के प्रति लगन तथा रुचि उत्पन्न हो न कि अब।

उ०5 = बच्चों द्वारा लिया गया निर्णय उचित नहीं था क्योंकि स्वयं हिलकर पानी न पीने का निश्चय उन्हें और भी अधिक कामचोर बना देगा। वे कभी भी कोई काम करना सीख नहीं पाएंगे। बच्चों को काम समझदारी के साथ करना चाहिए। बड़ों को उनको काम सिखाना चाहिए। और आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन देना चाहिए।

Scanned with CamScanner

कहानी से आगे –

उ०१ = अपनी क्षमता के अनुसार काम करना इसलिए जरूरी है क्योंकि क्षमता के अनुसार किया गया कार्य सही और सुचारू रूप से होता है। यदि हम अपने घर का काम या अपना निजी काम नहीं करेंगे तो हम कामचोर बन जाएँगे। हमें अपने कामों के लिए आत्मनिर्भर रहना चाहिए।

उ०२ = भरा – पूरा परिवार तब सुखद बन सकता है, जब सब मिल जुलकर कार्य करें और दुखद तब बनता है जब सब स्वार्थ भावना से कार्य करें। कामों के क्षमतानुसार विभाजित करने से कहानी जैसी दुखद स्थिति से बचा जा सकता है। कार्यों को बाँटने से किसी दूसरे को काम करने के लिए कहने की जरूरत नहीं होगी और तनाव भी उत्पन्न नहीं होगा।

उ०३ = बड़े होते बच्चे यदि माता-पिता के छोटे-मोटे कार्यों में मदद करें तो वे सहयोगी हो सकते हैं। जैसे अपना कार्य स्वयं करना, स्कूल जाने के लिए अपने आप तैयार होना। अपने खाने – पीने के बर्तन को यथास्थान रखें, अपने कमरे की सफाई रखें।

यदि हम बच्चों को कार्य करने की लगन नहीं सिखा पाएँगे तो, वे हमारे लिए एकदिन भार बन जाएँगे। बड़े होने पर यदि उनसे कार्य कराया जाएगा तो, वह तहस – नहस ही करेंगे जैसे कि कामचोर लेख में हुआ। इसलिए बच्चों को उनकी उम्र और रुचि के अनुसार कार्य करना चाहिए जिससे वे कार्य को लगन के साथ करें उन्हें उससे ऊब न हो तभी वे माता – पिता के सहयोगी हो सकते हैं।

उ०४ = कामचोर कहानी संयुक्त परिवार की कहानी है। इन दोनों में अंतर इस प्रकार से है —

1. एकल परिवार में सदस्यों की संख्या चार या पाँच होती है- माता – पिता व बच्चे। संयुक्त परिवार में सदस्यों की संख्या ज्यादा होती है – माता, पिता, बच्चे, दादा – दादी, ताऊ-ताई, चाचा – चाची, बुआ सभी सम्मिलित होती है।

Scanned with CamScanner

Page No. ___ Date __/__/20__

2. एकल परिवार में कार्य स्वयं करना पड़ता है जबकि संयुक्त परिवार में सब मिल जुलकर कार्य करते हैं।

3. एकल परिवार में सुख-दुःख का सामना अकेले करना पड़ता है जबकि संयुक्त परिवार में सुख-दुःख का सामना सब सदस्य मिलकर करते हैं।

Scanned with CamScanner